



REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X

IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)

UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514

VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER - 2017



सतत पोषणीय विकास (Sunstainable Development)

श्रीमती कीर्ति आनंद

असिस्टेंट प्रोफेसर(समाजशास्त्र)

प्रेम किशन खन्ना राजकीय महाविद्यालय जलालाबाद, शाहजहांपुर.

प्रस्तावना:-

सतत पोषणीय विकास एक लंबी और निरंतर प्रक्रिया है। पिछली अनेक शताब्दियों में निर्मित आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा प्रौद्योगिकी ढांचे को एक ही दिन में नष्ट नहीं किया जा सकता, साथ ही महसूस करना अनिवार्य है, कि विश्व में कुछ भी स्थाई नहीं है। हर वस्तु परिवर्तनशील समय के साथ परिवर्तित होती रहती है। संपोषणीय पोषणीय विकास के अंतर्गत जीव, भौतिक, आर्थिक तथा सामाजिक (biophysical economical and social) उद्देश्यों को अधिकतम सीमा तक प्राप्त करना होता है। संपोषणीय विकास के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती बिना विकास की रफ्तार को रोके पर्यावरण संरक्षण तथा संसाधनों का प्रबंधन करना है।

सतत पोषणीय विकास संकल्पना:- सतत पोषणीय विकास (sunstainable development) शब्दावली का प्रयोग सबसे पहले 1970 में पर्यावरण तथा विकास पर काकोयोक घोषणा (cocoyok declaration) के समय किया गया था। तब से लेकर अब तक यह अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की मूल संकल्पना बन गई है। इनका केंद्रीय बिंदु पर्यावरण के अनुकूल तथा मानव के लिए लाभप्रद विकास करना है। तब से लेकर अब तक यह संकल्पना आर्थिक विकास तथा प्राकृतिक संसाधनों के संदर्भ में एक अति चर्चित विषय बन गया है।

सन् 1987 में यह एक महत्वपूर्ण संकल्पना बन गई। सतत पोषणीय विकास को अनेक रूपों में परिभाषित किया जा सकता है, परंतु 1987 में पर्यावरण तथा विकास पर ब्रंटलैंड कमीशन (The Brundtland commission on environment and development) द्वारा हमारा साझा भविष्य (our common future) पर रिपोर्ट में दी गई। परिभाषा को सबसे अधिक मान्यता मिली। इसके अनुसार “सतत पोषणीय विकास वह

विकास है, जो भावी पीढ़ियों को अपनी आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ समझौता किए बिना ही वर्तमान की आवश्यकताओं को पूरा करें।

“Sustainable development is the development that meets the needs of the present without compromising the ability of future generation to meet their own needs.”



Definition given by the the Broundtland commission of environment and development in its report.

यह परिभाषा पर्याप्त नहीं है क्योंकि यहां वर्तमान आवश्यकताओं को परिभाषित नहीं करती हालांकि यह इस बात पर जोर देती है कि हमें पृथ्वी की रोशनी क्षमता की सीमाओं में ही रहना चाहिए

उपरोक्त परिभाषा का विद्वान संस्थाएं तथा देश अपनी सुविधा के अनुसार विभिन्न अर्थ निकालते हैं जून 1992 में रियो डी जेनेरो की रियो शिखर वार्ता (Rio summit) के दौरान यह स्पष्ट हो गया था, कि सतत पोषण का अर्थ विकसित तथा विकासशील देशों के लिए भिन्न है। विकसित देश आर्थिक तथा तकनीकी पहलुओं पर अधिक जोर देते हैं उनके अनुसार यदि पर्यावरणीय गौण प्रभावों (side effect) को कम करने की प्रौद्योगिकी का विकास किया जाए, तो वर्तमान वृद्धि दर आसानी से बढ़ाई जा सकती है। इसके विपरीत विकासशील देशों की विचारधारा भिन्न है। उनके विचार में गरीबी पर्यावरण की सबसे बड़ी प्रदूषक है। इसलिए लोगों की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए आर्थिक विकास में तेजी लाना आवश्यक है। विकासशील देशों का कहना है, कि पर्यावरण का सबसे अधिक प्रदूषण विकसित देशों ने किया है और इसे कम करने की जिम्मेदारी भी उन्हीं की है। विकासशील देशों को चाहिए कि वे पर्यावरण को स्वच्छ रखने के लिए विकासशील देशों की जनता का प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहायता करें।

विकसित तथा विकासशील दोनों ही प्रकार के देश आर्थिक विकास चाहते हैं। आर्थिक विकास औद्योगीकरण तथा नगरीकरण पर आधारित है और दोनों से ही पर्यावरण का प्रदूषण होता है। विकासशील देश गरीबी जैसी मूलभूत समस्याएं सुलझाना चाहते हैं जबकि विकसित देश उद्योग से संबंधित पर्यावरण प्रदूषण को नियंत्रित करके अपने उच्च उत्पादकता को स्थायित्व देना चाहते हैं। अनेक शोध कार्यों से पता चलता है कि विकसित देश विकासशील देशों की तुलना में संसाधनों का कहीं अधिक मात्रा में प्रयोग करते हैं।

सन् 1987 में ब्रंडटलैंड कमीशन की रिपोर्ट के बाद से बहुत से विद्वानों तथा संस्थाओं ने सतत पोषणीय विकास पर प्रकाश डाला और इसे एक निश्चित परिभाषा देने का प्रयास किया। इसके अनुसार “सतत पोषणीय विकास पारिस्थितिकी तंत्र की पोषण क्षमता के अंदर रहकर मानवीय जीवन के स्तर को ऊंचा करता है। “(sustainable development is improving the quality of human life by living within the carrying capacity of the supporting eco-system)।

सतत पोषणीय विकास के संदर्भ में निम्नलिखित तत्व उल्लेखनीय हैं:-

1. अल्प अवधीय विकास के लिए जीव-भौतिक (biophysical) पर्यावरण पर बहुत दबाव डाला जाता है। जो दीर्घावधि विकास के लिए हानिकारक है। उत्पादकता बढ़ाने की एक सीमा होती है।
2. मानव के अस्तित्व की सुरक्षा केवल आधारभूत संसाधनों की सुरक्षा से ही हो सकती है
3. नवीकरणीय संसाधन (renewable resources) भी तभी उपलब्ध होंगे जब उनके प्रबंधन के उचित उपाय किए जाएं।
4. परंपरागत अर्थव्यवस्था अनिवार्य रूप से संसाधनों के प्रयोग की सूचक नहीं है।

संपोषणीय विकास का चार्टर:-

विश्व पर्यावरण एवं विकास द्वारा विकसित ब्रंडटलैंड रिपोर्ट हमारा सामान्य भविष्य के संदर्भ में अंतरराष्ट्रीय चैंबर और कॉमर्स में संपोषणीय विकास के लिए बिजनेस चार्टर का निर्माण करने के लिए व्यापार प्रतिनिधियों के एक कार्य दल का गठन किया गया। इस दल के सदस्यों ने पर्यावरण प्रबंधन के लिए 16 सिद्धांतों की घोषणा की जो कि संपोषणीय विकास के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण पहलू हैं। इसे औपचारिक रूप से अप्रैल 1991 में द्वितीय पर्यावरण प्रबंधन पर विश्व उद्योग सम्मेलन में औपचारिक रूप से आरंभ किया गया। इसके अंतर्गत निम्नलिखित तथ्य हैं:-

1. **कारपोरेट प्राथमिकता:-** पर्यावरण प्रबंधन को सर्वोच्च कारपोरेट प्राथमिकता एवं संपोषणीय विकास के लिए एक आधारभूत निर्धारक के रूप में स्वीकार करना तथा पर्यावरण से गहन तरीके से कार्यवाही संचालित करने के लिए नीतियां एवं कार्यक्रम और व्यवहार का निर्धारण करना।
2. **समन्वित प्रबंधन:-** प्रत्येक व्यापार में प्रबंधन के सभी कार्यों में एक अनिवार्य तत्व के रूप में इन नीतियों कार्यक्रमों एवं व्यवहारों को समायोजित करना।
3. **सुधार की प्रक्रिया:-** कारपोरेट नीतियों कार्यक्रमों एवं पर्यावरण निष्पादन में सुधार को जारी रखने के लिए प्रौद्योगिकी विकास वैज्ञानिक समाज एवं उपभोक्ता आवश्यकताएं तथा सामुदायिक उम्मीदों के साथ कानूनी भी नियमों को प्रारंभिक बिंदु के रूप में ध्यान में रखा जाए एवं अंतरराष्ट्रीय रूप से समान पर्यावरणीय मापदंड लागू किए जाएं।
4. **कर्मचारी शिक्षा:-** कर्मचारियों को अपने कार्य पर्यावरणीय दृष्टि से उत्तरदायी तरीके से क्रियान्वित करने के लिए शिक्षित प्रशिक्षित एवं प्रेरित करना।
5. **पूर्व मूल्यांकन:-** किसी नई गतिविधि परियोजना को प्रारंभ करने एवं किसी सुविधा को बंद करने या एक स्थान को छोड़ने से पूर्व उसके पर्यावरणीय प्रभाव का मूल्यांकन करना।
6. **उत्पाद एवं सेवाएं:-** ऐसे उत्पादों एवं सेवाओं का विकास करना जिनका कोई अवांछित पर्यावरणीय प्रभाव नहीं हो और वे अपने वांछित प्रयोग में सुरक्षित भी हो। ऊर्जा एवं प्राकृतिक संसाधनों की खपत की दृष्टि से दक्षिण हो एवं वे पुनर्चक्रण एवं पुनः उपयोगी हो तथा उनका सुरक्षित निस्तारण/वियोजन संभव हो।
7. **ग्राहक सुझाव:-** उत्पाद एवं सेवाओं के सुरक्षित ढंग से उपयोग, परिवहन, संग्रह एवं निस्तारण के लिए उपभोक्ताओं, ग्राहकों वितरकों एवं जनता को सुझाव देना। और जहां उचित हो वहां शिक्षित करना।
8. **सुविधाएं एवं क्रियान्वयन:-** ऊर्जा एवं पदार्थों के दक्षिण प्रयोग को ध्यान में रखते हुए सुविधाओं एवं व्यवहारिक गतिविधियों का विकास, डिजाइन एवं क्रियान्वयन करना, उनका संपोषणीय प्रयोग करना, नवीनीकरण संसाधनों का संपोषणीय प्रयोग करना, विपरीत पर्यावरणीय प्रभावों को न्यून करना, अपशिष्ट पदार्थों का सुरक्षित एवं उत्तरदाई निस्तारण करना।
9. **शोध:-** उधम के साथ संबंध होकर कच्चे मालों, उत्पादों, उत्सर्जन, प्रकमो एवं कचरे के पर्यावरणीय प्रभावों पर शोध का संचालन या समर्थन करना तथा ऐसे विपरीत प्रभावों को न्यूनतम करने के लिए नए रास्ते ढूंढना।

10. **एहतियाती उपागमः-** गंभीर या अनुक्रमणिका पर्यावरणीय प्रभावों को रोकने के लिए वैज्ञानिक एवं तकनीकी समझ के अनुरूप विनिर्माण, विपणन या उत्पादों एवं सेवाओं के उपयोग को संशोधित करना।
11. **ठेकेदार एवं आपूर्तिकर्ताः-** इन सिद्धांतों को बुद्धिम की ओर से कार्य करने वाले ठेकेदारों द्वारा अपनाने, उन्नयन करने और जहां उचित हो, वहां उनके व्यवहारों में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित करना तथा इन सिद्धांतों को आपूर्तिकर्ताओं द्वारा भी व्यापक रूप से अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना।
12. **आपातकालीन तैयारीः-** जहां गंभीर आपदाएं आती हैं, वहां आपातकालीन तैयारी की योजना का निर्माण एवं विकास करना तथा साथ ही साथ आपातकालीन सेवाओं, उचित प्राधिकरणों एवं स्थानीय समुदाय के साथ सहयोग करना, साथ ही साथ सीमा पार होने वाले प्रभावों की भी पहचान करना।
13. **प्रौद्योगिकी हस्तांतरणः-** अब दोगी कि एवं सार्वजनिक क्षेत्र में पर्यावरणीय दृष्टि से स्क्षम प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन विधियों को पूरी तरह स्थानांतरित करने में सहयोग प्रदान करना।
14. **सामान्य प्रयासों को योगदानः-** सार्वजनिक नीति एवं व्यापार के विकास के लिए योगदान करना, सरकारी एवं अंतर सरकारी कार्यक्रमों एवं शैक्षणिक उपक्रमों को सहायता देना ताकि वे पर्यावरण जागरूकता और संरक्षण में वृद्धि करें।
15. **चिंताओं के प्रति खुलापनः-** संभावित आपदा एवं कार्यान्वयन, उत्पादों, कचरे या सेवाओं के प्रभाव तथा उनके सीमा पर या बेसिक प्रभावों के प्रति कामगारों एवं जनता की चिंताओं पर उचित प्रतिक्रिया दर्शाते हुए उनसे खुले रूप से बातचीत करना।
16. **अनुपालन एवं रिपोर्टिंगः-** पर्यावरण निष्पादन का मापन करना, नियमित पर्यावरणीय लेखांकन एवं मूल्यांकन करना, कंपनी की जरूरतों के अनुरूप अनुपालन का मूल्यांकन करना, कानूनी आवश्यकताओं की पूर्ति करना, कंपनी के निदेशक बोर्ड, कर्मचारियों, प्राधिकरणों एवं जनता को उचित एवं समय-समय पर सूचनाएं उपलब्ध कराना।

संपोषणीय पोषणीय विकास के उद्देश्य-

संपोषणीय पोषणीय विकास के स्पष्ट उद्देश्य हैं तथा पुणे प्राप्त करने के लिए संसाधन भिन्न हो सकते हैं। मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं:-

1. मानव की आधारभूत आवश्यकताएं जैसे-भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा, स्वास्थ्य, सुरक्षा एवं आत्मसम्मान पूरी होनी चाहिए।
2. विकास इस तरह से होना चाहिए कि पारिस्थितिकी संतुलन तथा पर्यावरण की पवित्रता पर न्यून प्रतिकूल प्रभाव पड़े।
3. विश्व के सभी देशों एवं व्यक्तियों को उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए मिलकर कार्य करना चाहिए।



संपोषणीय पोषणीय विकास के अंतर्गत जीव-भौतिक, आर्थिक तथा सामाजिक (biophysical, economical and social) उद्देश्यों को अधिकतम सीमा तक प्राप्त करना होता है। मार्क्सवाद से पहले की अर्थव्यवस्था के शुरू होने से सामाजिक तत्वों को बराबर का महत्व प्राप्त होने लगा योजना का मुख्य उद्देश्य अधिकतम लाभ है। (Maximum good, maximum people is the prime objective of planning) इस स्तर पर अधिकतम आर्थिक तथा सामाजिक लाभ उठाना ही मुख्य उद्देश्य है। परंतु पर्यावरण की दृष्टि से जीव-भौतिक चरो (biophysical variables) का ध्यान रखना आवश्यक है। अतः संपोषणीय पोषणीय विकास उतने ही विकास की वकालत करता है जितना कि जीव-भौतिक दृष्टि से संभव को यथा आर्थिक दृष्टि से व्यवहार तथा सामाजिक रूप से स्वीकार्य हो।

(Therefore sustainable development advocates a development process that a biophysical permissible economically viable and social acceptable.) दूसरे शब्दों में यह विकास की प्रक्रिया है जो, जीव-भौतिक, आर्थिक तथा सामाजिक सेवाओं द्वारा निर्धारित होती है।

जोहांसबर्ग सम्मेलन:- सतत या संपोषणीय विकास पर विश्व सम्मेलन (world summit on sustainable development, WSSD) में हजारों प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। जिसमें कई राष्ट्राध्यक्ष, सरकारों के अध्यक्ष, राष्ट्रीय प्रतिनिधि एवं नेता, गैर सरकारी संगठनों के प्रतिनिधि, व्यापारिक एवं अन्य बड़े समूहों

के प्रतिनिधि शामिल थे। इस समय उनका लक्ष्य कुछ कठिन चुनौतियों का सामना करने के लिए विश्व का ध्यान आकर्षित करना था। इन चुनौतियों में बढ़ती जनसंख्या के दौर में लोगों के जीवन की बेहतरी और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण आदि सम्मिलित थे।

1992 के रियो के पृथ्वी सम्मेलन में अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने एजेंडा 21 को स्वीकार किया था जो संपोषणीय विकास के लिए एक वैश्विक कार्ययोजना थी। इसके 10 साल बाद जोहांसबर्ग में हुए सम्मेलन में आज के नेतृत्व को एजेंडा 21 को लागू करने के लिए गढ़ेजेछढघढढ नहीं बच्चों के निर्धारण एवं ठोस कदम उठाने का उद्देश्य तय किया गया था।

संयुक्त राष्ट्र संपोषणीय विकास आयोग जिसे CSD 10 भी कहते हैं, ने जोहांसबर्ग में अपने दशमी बैठक का आयोजन किया था। यही आयोग WSSD के लिए प्राथमिक समिति का कार्य करता था। CSD 10 बैठक का परिचालन एक ब्यूरो द्वारा किया गया था जिसमें विश्व के प्रत्येक क्षेत्र से 2 प्रतिनिधियों को लेकर कुल 10 सदस्य शामिल थे।

संपोषणीय विकास के लिए आवश्यक दशाएं

1. **जननांकीय दक्षता** - जो संपूर्ण विश्व को स्थिर जनसंख्या की ओर पहुंचा सके तथा जन्म दर और मृत्यु दर बहुत ही निम्न हो तथा जनसंख्या अपने इष्टतम स्तर पर रहे
2. **ऊर्जा दक्षता** - जिसमें उत्पादन और योग कार्य क्षमता अधिक रहें और इसमें नवीनीकरण ऊर्जा संसाधनों के उपयोग की अधिक निर्भरता रहे।
3. **संपोषणीय संसाधन** - जिसमें प्रकृति के ऊपर अधिक निर्भरता के बिना उसकी पूंजी का खर्च किया जाए
4. **युक्तिसंगत आर्थिक विकास** - जिसमें विकास की सभी सुविधाओं में लोगों की समान भागीदारी हो।
5. **राजनीतिक भागीदारी**- इसमें सभी देशों की वैश्विक स्तर पर भागीदारी हो तथा बातचीत के द्वारा समस्या का हल निकल सके।
6. **एक आध्यात्मिक संक्रमण**- जो लोगों की मनोवृत्ति में बदलाव लाता हो जिसके तहत प्रकृति और मानव को अलग-अलग नहीं देखा जाता हो।

संपोषणीय विकास के लिए रणनीति

1. निर्धन लोगों की समस्या पर अधिक बल देना चाहिए क्योंकि अधिकांश पर्यावरणीय समस्याएं इन्हीं लोगों द्वारा जनित हैं इनके पास कोई विकल्प नहीं है।
2. संसाधन प्रबंधन और नियोजन स्थानीय स्तर पर स्थानीय सूचनाओं के सहारे हो। यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि स्थानीय स्तर पर सूचनाएं महत्वपूर्ण एवं सस्ती होती है और लोगों के लिए अधिक ग्राहा होती हैं।
3. संसाधनों का उचित मूल्यांकन होना चाहिए क्योंकि जो लोग संसाधनों का उपयोग करते हैं वह संसाधन उपयोग के आंतरिक कीमतों और वाह्य कीमतों को भी जोड़ सकें।

4. बुद्धिमत्तापूर्वक प्रबंधन, जो संसाधनों की उपलब्धता को सुधार सके और जिस कारण दुर्भाग्यपूर्ण या हानिकारक अवशिष्टों का जन्म होता है, उसे पूर्णतया समाप्त कर दें या लगभग समाप्त कर सकें।
5. गैर विध्वंसक संसाधनों में ऐसी पूंजी के उपयोग को बढ़ावा देना है, जो वस्तुओं के उपयोगी, टिकाऊ एवं पुनर्चक्रण और पदार्थों के पुनः उपयोग के ऊपर बल देता हो
6. समृद्धि एवं शक्ति का पुनरतणतणतण वितरण इसमें जनसंख्या में असमानता को घटाया जा सके।

संपोषणीय विकास के लिए प्राथमिकता के क्षेत्र

जनसंख्या वृद्धि की समस्या को कम करना:- यह इसलिए आवश्यक है कि वह अन्य प्राथमिक क्षेत्रों की समस्याओं को सूचित करता है।

तीसरी दुनिया के देशों में गरीबी असमानता और कर्ज निराकरण:- इसमें स्वास्थ्य सुधार आयु प्रत्याशा शिक्षा और बढ़ता रोजगार आता है या इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे जातियों के नुकसान को कम किया जा सकता है और जल एवं भूमि निम्नीकरण में कमी लाई जा सकती है।

कृषि विकास को संपोषणीय विकास बनाना:- इसके अंतर्गत मृदा अपरदन में कमी और पर्यावरणीय क्षेत्र से बचाव शामिल है या इसलिए आवश्यक है कि यह भूमि निम्नीकरण की रोकथाम, जल प्रदूषण की रोकथाम एवं जलस्तर में कमी की भी रोकथाम करेगा। साथ ही साथ यह ऊर्जा संरक्षण और जाति संरक्षण पर भी ध्यान देगा।

वनों एवं अन्य निवासियों का संरक्षण:- इसके अंतर्गत प्रति बंजर और निम्न कृषि भूमि पर पुनर नवीनीकरण और वनीकरण अन्य जैविक संसाधनों का संरक्षण, हरित गृह गैसों की रोकथाम और ओजोन 6:00 पर नियंत्रण को शामिल करते हैं। यह अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह जैव विविधता के नुकसान की रोकथाम करेगा तथा भूमि निम्नीकरण एवं प्रदूषण से बचाएगा।

संपोषणीय ऊर्जा उपयोग:- यह ऊर्जा उपयोग के कार्य क्षमता में वृद्धि, ऊर्जा संरक्षण एवं नवीनीकरण संसाधनों में वृद्धि को सम्मिलित करता है। यह आवश्यक इसलिए है कि यह वायु प्रदूषण की रोकथाम करेगा, भूमि निम्नीकरण और ऊर्जा एवं खनिज संसाधनों के क्षरण की रोकथाम करेगा।

संपोषणीय जल संसाधन उपयोग:- इसके अंतर्गत जल संसाधनों की कार्यक्षमता में वृद्धि एवं जल की गुणवत्ता का संरक्षण शामिल है यह इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह जल प्रदूषण जल स्तर एवं भूमि निम्नीकरण की रोकथाम करेगा।

अपशिष्ट जनन की रोकथाम:- इसके अंतर्गत उत्पादन प्रक्रियाओं में सुधार हो, अपशिष्ट प्रबंधन एवं पर्यावरणीय रूप से साम्य पुनर्चक्रण प्रक्रियाओं को बढ़ावा मिले। या इसलिए महत्वपूर्ण है कि इससे वायु एवं जल प्रदूषण में कमी आएगी तथा ऊर्जा, खनिज एवं जल संसाधनों के क्षरण को रोका जा सकेगा।

सम पोषणीय विकास के समक्ष चुनौतियां:- संपोषणीय विकास के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती बिना विकास की रफ्तार को रोके पर्यावरण संरक्षण तथा संसाधनों का प्रबंधन करना है। यह पर्यावरण को आर्थिक विकास का मुख्य अंग मानता है। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सर्वमान्य स्तर को प्राप्त करने में उत्तर दक्षिण

विभाजन बातचीत के बीच बाधा बनता है। विकासशील देश मानते हैं की पर्यावरण संबंधी नियमों को लागू कर विकसित देश विकास प्रक्रिया से पीछे धकेल रहे हैं संसाधनों का अधिकतम उपभोग विकसित देश करते हैं। जबकि गरीब देशों को उपभोग की कीमत प्रदूषण जय विविधता हास जंगलों तथा प्राकृतिक संसाधनों के दोहन पर प्रतिबंध से चुकाने की बात की जा रही है लेकिन वे अपने यहां अत्यधिक उत्पादन तथा उपभोगवादी जीवनशैली को बदलने के लिए तैयार नहीं है जलवायु सम्मेलन अथवा क्योटो प्रावधानों पर भी विकसित तथा विकासशील देश एकमत नहीं है विकासशील देशों का मानना है कि पर्यावरण प्रदूषण का मूल कारण औद्योगिक देशों की अति उपभोक्तावादी जीवन शैली है इसलिए पर्यावरण संरक्षण अथवा संपोषणीय विकास की प्राप्ति के लिए विकसित देशों द्वारा गरीब देशों को तकनीकी तथा वित्तीय सहायता प्रदान करनी चाहिए परंतु इस पर भी पूर्ण सहमति नहीं बनी है। संपोषणीय विकास की अवधारणा को सैद्धांतिक तौर पर मानना आसान है परंतु इस को व्यवहारिक रूप से अपना ना उतना ही कठिन है क्योंकि इस पर सहमति नहीं है जहां राष्ट्रों का हित आर्थिक विकास प्राप्ति में है वही वास्तविक चुनौती यह है कि ऐसे विकास का ढांचा खड़ा किया जाए जो आर्थिक विकास तथा पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन बना सके।

संपोषणीय विकास हेतु संभावित समाधान:- प्रौद्योगिकी विकास तथा वैज्ञानिक दक्षता के बल पर मानव ने कृषि सिंचाई खनन उद्योग परिवहन वानिकी भूमि प्रबंधन आदि क्षेत्रों में तीव्र गति से विकास किया है परंतु दुर्भाग्य से ऐसा करने में उसने प्राकृतिक पर्यावरण की क्रिया प्रणाली में विघ्न डाला है और पर्यावरण का हास किया है अब मानव को इस प्रकार के विकास के गौड़ प्रभावों (side effects) का आभास होने लगा है और वह सतत पोषणीय विकास की विधियों को अपनाकर इन प्रभावों को न्यूनतम स्तर तक सीमित करने का प्रयास कर रहा है विकास से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण पर्यावरणीय समस्याओं तथा उन समस्याओं को हल करने की विधियों का संक्षिप्त विवरण निम्नवत है:-

1. **खाद्य उत्पादन तथा जैविक कृषि:-** पिछले कुछ दशकों में विश्व की जनसंख्या में तीव्र गति से वृद्धि हुई है जिससे खदानों की मांग में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है जनसंख्या में तीव्र वृद्धि भारत चीन इंडोनेशिया, मिस्र, ब्राजील, तथा एशिया व दक्षिण अमेरिका के विकासशील देशों में अधिक पाई गई है। मानव में रसायनिक उर्वरकों अधिक उपज देने वाले बीजों सिंचाई के साधनों कीटनाशकों आदि के प्रयोग से खाद्य के उत्पादन में बहुत ही वृद्धि की है। 1960 के दशक में हरित क्रांति का जन्म हुआ परंतु इसी के साथ बहुत सी पर्यावरणीय एवं पारिस्थितिकी समस्याओं का भी जन्म हुआ रसायनों के अत्यधिक प्रयोग से मृदा की उपजाऊ शक्ति क्षीण हुई और भूमि जल तथा वायु का प्रदूषण हुआ।
2. **संपोषणीय कृषि:-** कृषि में विशेषकर द्वितीय विश्व युद्ध के बाद बदलाव आया। नई प्रौद्योगिकी मैकेनाइजेशन रसायन उपयोग में वृद्धि विशेष ई करण एवं सरकारी नीतियों के कारण खाद एवं रेशा उत्पादन स्थिति में है। हालांकि यह बदलाव अनेक सकारात्मक प्रभाव लाए हैं तथा कृषि में अनेक खतरों को कम किया है इसका मूल्य भी चुकाना पड़ा है जिसमें से कुछ निम्नलिखित हैं: मृदा अपरदन, सतही अपरदन, पारिवारिक खेतों में कमी, खेतिहर मजदूरों के जीवन एवं कार्य

स्थितियों की लगातार अवहेलना, उत्पादन लागत में वृद्धि तथा ग्रामीण समुदायों में सामाजिक एवं आर्थिक स्थितियों का विकेंद्रीकरण हुआ।

कृषि जिससे अनंत काल तक बृहत मानव उपयोग हेतु स्रोतों के उपयोग की उच्च कुशलता एवं प्रकृति के संतुलन का धीरे-धीरे विकास किया जा सकता है जो कि मानव और अन्य मुख्य प्रजातियों के पक्ष में है।

संपोषणीय कृषि के साधन:- फसल विविधता की तकनीक जैसे फसल चक्रीकरण, मिश्रित फसल उत्पादन, दोहरी फसल लेना।

संपोषणीय कृषि के लाभ:- फसल चक्रीकरण (crop rotation) एक ही खेत में अलग-अलग पौधे लगाना अथवा दिन फसलों को उगाना। यह मृदा की नमी में वृद्धि एवं कीड़ों पर नियंत्रण तथा पोषण की उपलब्धता में सहायता करता है।

एकीकृत पोषण प्रबंधन (INM):- एक विस्तृत शब्द है जो निम्न से मिलकर बना है:-

- मृदा फसल और पशुओं के बीच पोषण चक्र।
- कार्बनिक उपायों तथा रासायनिक खादों का संयुक्त उपयोग।
- जैविक नाइट्रोजन स्थिरीकरण क्षमताओं का उपयोग।

आई एन एम के मुख्य तत्व हैं—फर्टिलाइजर, गोबर की खाद, कंपोस्ट खाद, फसल अवशेष, हरी खाद, राइजोबियम एवं नील हरित शैवाल। इनका प्रबंधन इसका मुख्य उद्देश्य है।

एकीकृत कीट प्रबंधन (IPM):- एकीकृत कीट प्रबंधन का विकास पारिस्थितिकी, कीट एजेंट एवं कीट दबाव के प्राकृतिक मैकेनिज्म का अधिकतम लाभ प्राप्त करने के ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में किया गया है।

- फसल कीटों के सीमित हानिकारक प्रभाव के लिए भौतिक, रासायनिक एवं जैविक विधि का संयुक्त प्रयोग किया जाता है।
- आईपीएम का उद्देश्य आर्थिक, सामाजिक एवं पर्यावरण मूल्य के संबंध में कीट नियंत्रण करना है।
- आईपीएम के अंतर्गत कीट प्रतिरोधक एवं कीट सहनशील प्रजातियों का उपयोग, जल्दी अथवा देरी से पौधों के गाने अथवा लगाने की संस्कृति, ग्रीष्म हल चलाना अथवा ग्रीष्म जुताई, परजीवी का उपयोग, फेरोमोन ट्रैप्स का उपयोग, फसल कीटों के बैठे जन एवं कीटभक्षियों का उपयोग, कीटनाशकों का उचित उपयोग, वृद्धि नियंत्रको, नर बंधता तकनीक तथा दबाव कार्यक्रम शामिल है।

टिकाऊ जल प्रबंधन (SWM):- अच्छी फसल उत्पादकता के लिए जल का उचित प्रबंधन का उपयोग किया जाना अति आवश्यक है जल स्रोतों का उचित उपयोग, कमांड क्षेत्रों में जल कृषि, सतही जल नियंत्रक, लवणीकरण को रोकने के लिए सिंचाई प्रणाली का उचित डिजाइन एवं प्रबंधन, भूजल के उचित उपयोग हेतु दूर संवेदन सिद्धांत का उपयोग, निकास व्यवस्था का उचित विकास, पर्यावरणीय असंतुलन एवं कम लागत के बांधों का निर्माण करना चाहिए।

उत्तर फसल तकनीक कम लागत के सोखने भंडारण करने एवं मार्केटिंग की प्रौद्योगिकी होनी चाहिए। कृषि उत्पादों से मूल्य आधारित उत्पादों के लिए भी तकनीक का विकास होना चाहिए।

ऊर्जा संकट तथा पारिस्थितिकी तंत्र (energy crisis and the ecosystem):-



1. **पारिस्थितिकी तंत्र** में ऊर्जा का बड़ा महत्व होता है हमारी पृथ्वी पर सूर्य ही समस्त ऊर्जा का स्रोत है कोयला खनिज तेल जल ऊर्जा पवन ऊर्जा परमाणु ऊर्जा सभी और ऊर्जा के परिवर्तक रूप हैं सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊर्जा हमारी आवश्यकताओं से कहीं अधिक है परंतु वर्तमान युग में मुख्यतः कोयला खनिज तेल तथा जल विद्युत को ही ऊर्जा के रूप में प्रयोग किया जाता है बढ़ते हुए नगरीकरण तथा औद्योगीकरण के फलस्वरूप इन दिनों जैसे कोयला खनिज तेल तथा प्राकृतिक गैस का प्रयोग बहुत बढ़ गया है इससे एक और तो पर्यावरण का प्रदूषण होता है और दूसरी ओर ऊर्जा के इन संसाधनों की कमी महसूस होने लगी है इतने शीघ्र ही समाप्त होने की आशंका जाती है बड़े-बड़े बांधों तथा ताप एवं परमाणु विद्युत संयंत्रों से भी पर्यावरण का बड़े पैमाने पर प्रदूषण हो रहा है सतत पोषणीय विकास के लिए अपारंपरिक ऊर्जा के स्रोतों का प्रयोग करने की आवश्यकता है
2. **प्रदूषण तथा पर्यावरणीय अवनयन(pollution and environmental degradation):-** अधिकांश प्रदूषण मानवीय क्रियाकलापों से होता है जिसमें औद्योगीकरण तथा नगरीय करण सबसे अधिक दोषी हैं प्रदूषण के मुख्य उदाहरण में वायु प्रदूषण के मुख्य दोषी उद्योगों तथा वाहनों से निकलने वाले हानिकारक रसायनिक पदार्थ एवं नगरों के साथ उद्योगों के अपशिष्ट पदार्थ कृषि क्षेत्र में प्रयुक्त रसायनिक पदार्थ एवं नगरों तथा उद्योगों में आवश्यकता से अधिक ध्वनि है। सतत पोषणीय विकास के लिए उद्योग स्थापित करते समय इस बात का ध्यान रखा जाए कि यह निकटवर्ती इलाकों को न्यूनतम हानि पहुंचाएं नगरी तथा औद्योगिक अपशिष्ट पदार्थों की सफाई के लिए संयंत्र स्थापित किए जाएं वाहनों में सुधार करके प्रदूषण को काफी हद तक रोका जा सकता है जनसाधारण को प्रदूषण संबंधी समस्याओं के संबंध में शिक्षित किया जाना चाहिए।
3. **अपशिष्ट पदार्थों के निपटान तथा प्रबंधन की समस्या (problem of waste disposal and its management):-** अपशिष्ट पदार्थों के निपटान की समस्या भी बड़ी गंभीर है पहले तो या

विकसित देशों की ही समस्या थी, परंतु अब यहां विकासशील देशों में भी विकराल रूप धारण करने लगी है। बड़ी मात्रा में अपशिष्ट तथा विषैले पदार्थ हमारे इर्द-गिर्द जमा हो जाते हैं और पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं। इनमें घरेलू औद्योगिक खनन तथा कृषि अपशिष्ट पदार्थ प्रमुख हैं इनमें प्लास्टिक, रबड़, शीशा आदि सम्मिलित होते हैं इनका विनाश जल्दी से नहीं होता और भी बहुत देर तक पर्यावरण का प्रदूषण करते रहते हैं।

4. **सिंचाई तथा लवण एवं जल क्रांति की समस्या (irrigation and problem of of salinity and water logging):-** पिछले 50 वर्षों में सिंचाई के क्षेत्र में बहुत अधिक उन्नति हुई है और विस्तृत कृषि को सिंचाई की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। इससे उपज में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है परंतु जल के उपयुक्त प्रबंध के अभाव में तथा किसानों की अज्ञानता एवं लालची क्रोध के कारण बहुत बड़े क्षेत्र में लवणता एवं जलाक्रांति की समस्या पैदा हो गई है यह समस्या कम प्रभाव तथा अधिक ऊंचाई वाले इलाकों में तो गंभीर रूप धारण कर गई है।
5. **वनों का विनाश तथा मरुस्थलीकरण:- (deforestation and desertification):-** मानव द्वारा आर्थिक विकास करने के साथ-साथ वनों का बड़े पैमाने पर विनाश हुआ है। जनसंख्या में तीव्र वृद्धि के कारण उत्पादों की मांग में भी वृद्धि हुई है। जिस कारण वनों का विनाश बड़ी तेजी से हुआ है। इसके अतिरिक्त कृषि नगरीकरण खनन सड़क निर्माण बांधों के निर्माण आदि के विस्तार में वनों का बड़ी मात्रा में पास हुआ है पौधों की बहुत सी किस्में पहले ही लुप्त हो चुकी है और कुछ अन्य किस्म लुप्त होने की कगार पर हैं। पर्यावरण तथा पारिस्थितिकी तंत्र को विनाश से बचाने के लिए प्रत्येक देश को वनारोपण कार्यक्रम लागू करने की आवश्यकता है। पारिस्थितिकी तंत्र को सुरक्षित रखने के लिए एक तिहाई क्षेत्रफल वनों का होना अनिवार्य है इसके लिए वनों की अंधाधुंध कटाई पर रोक लगाना तथा नए पेड़ लगाना अति आवश्यक है।

निष्कर्ष:-

सतत विकास की दिशा में सबसे प्रभावशाली उपायों की समझ उन समुदायों तथा लोगों की होती है जो इनसे प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित हुए हैं इसलिए पर्यावरण संरक्षण तथा सतत विकास के संबंध में नागरिक समाज की भूमिका महत्वपूर्ण रूप से बढ़ी है। पर्यावरण तथा विकास से संबंधित मामलों में नागरिक समाज को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करने की बात पहली बार 1992 में रियो पृथ्वी शिखर वार्ता में स्वीकार की गई। रियो शिखर वार्ता के बाद से विश्व की विकास नीतियों से संबंधित मामलों में नागरिक समाज विशेषकर गैर सरकारी संगठनों की भूमिका में निरंतर वृद्धि हुई है। 30 नवंबर 1999 को विश्व व्यापार संगठन की हानिकारक नीतियों के विरुद्ध विश्व भर से आए हजारों लोगों ने सीएटल अमेरिका की सड़कों पर एकत्रित होकर इस के अधिवेशन की कार्यवाही को विफल कर दिया भारत में लोगों के लगभग 300 प्रतिनिधियों ने विश्व विकास बैंक के अध्यक्ष को एक खुला पत्र सौंपा जिसमें विश्व बैंक के कार्यक्रम के अंतर्गत जैव विविधता के संरक्षण के नाम पर मध्य प्रदेश के कई कवियों को वनों से वंचित करने की कार्यवाही के प्रति रोष प्रकट किया गया।

आज पर्यावरण संरक्षण के विभिन्न पहलुओं पर अनेक अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर की स्थापना 1961 में स्विट्जरलैंड में हुई यह संगठन पर्यावरण संरक्षण

संबंधी सभी समस्याओं से जुड़ा हुआ है इसने विश्व व्यापार संगठन में पर्यावरण संबंधी झगड़ों पर गैर सरकारी संगठनों को अच्छे ढंग से नेतृत्व प्रदान किया है 1971 में स्थापित फ्रेंड्स फॉर द अर्थ ने परमाणु ऊर्जा तथा हल्के शिकार जैसे मुद्दों पर व्यापक अभियान चलाया ग्रीन पीस संगठन ने जलवायु परिवर्तन वन महासागर परमाणु खतरे विषैले रसायन सतत व्यापार आदि विषयों पर सफल अभियान चलाए हैं प्राकृतिक संसाधनों तथा प्राकृतिक संपत्ति के संरक्षण के लिए अर्थ बाद संस्था वैज्ञानिकों शिक्षकों तथा आम लोगों के बीच सहयोग स्थापित करने में प्रयत्नशील है भारत में 10 ग्राम स्वराज्य संघ द्वारा चिपको आंदोलन टिहरी बांध विरोधी संघर्ष समिति द्वारा टिहरी बचाओ आंदोलन नर्मदा बचाओ आंदोलन द्वारा सरदार सरोवर परियोजना विरोधी आंदोलन तरुण भारत संघ द्वारा जल संरक्षण आंदोलन नागरिक समाज द्वारा विकास को पर्यावरण संरक्षण tआधारित बनाने की सफल मुहिम का उदाहरण है।

संदर्भ सूची:-

1. Learning for sustainability : sustainable development-2007
2. Bakari Muhammad globalisation and sustainable development-November 2013
3. Economic update- January 2016
4. Smith sushant ecologically sustainable development integrating economics ecology and law 2013
5. Writ R. A.short history of progress -2004
6. Squats R. Stories from the stone age beyond productions – 2009
7. World wide fund for nature- 2008
8. Ternar G. N. (2008) A comparison of the limit to growth with 30 years of reality – 2009
9. Global environmental change- sustainable ecosystems – 2008
10. Diamond j. (2005) how societies choose to fail are succeed
11. Diamond J.(2005) Guns , germs and steel the fates of human societies
12. International centre for sustainable cities 1993
13. Ganguly vandana Shiva sead of self reliance 2009
14. Heroes for the green country 2009
15. Buksh B. (2003). Request for sustainability challenges for process system in engineering
16. Sunstability and sustainable development circular ecology July 2016
17. Williams colin C. “the diverse and contested meaning of sustainable development” june 2004
18. State of the word 2013 is sustainability still possible
19. Strong and Sunstable consumption governance- precondition for a degrowth path.
20. Morelli John (2011) environmental sustainability : a definition for environmental sustainability
21. Toman Michael A. “the difficulty in defining sustainability” resource for the future 1992
22. Urban intelligence network 2011
23. Seventh international environmental management hardship leadership symposium 2008
24. Preface ecosystems and human well-being. A synthesis report of the millennium ecosystem 2005
25. Alvarez c. Search table agriculture and value network 2011
26. Dhakal Krishna P” integrating sustainability into highway project. Sustainability indicators and assessment tool for roads. 2011
27. Adams W. M. 2006. Future of sustainability: rethinking environmental and development in the 21st century.
28. International institute for the sustainable development 2009

29. The earth charter initiative 2000
30. Rather blake D. 2004 search stability as dialogue of value changes to the society of development.
31. Michael vol. 2005 empirical investigation of the impact of using co-design methods when generating proposal for sustainable travel solutions.



श्रीमती कीर्ति आनंद

असिस्टेंट प्रोफेसर(समाजशास्त्र) , प्रेम किशन खन्ना राजकीय महाविद्यालय जलालाबाद,
शाहजहांपुर.